नूह कितने वर्ष जीवित रहा?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 1

बाइबल के अनुसार नूह कुल 950 वर्ष जीवित रहा — जलप्रलय से पहले 600 वर्ष और उसके बाद और 350 वर्ष।

उत्पत्ति 9:28-29 (पवित्र बाइबल: Hindi O.V.)
“और नूह जलप्रलय के बाद तीन सौ पचास वर्ष और जीवित रहा। और
नूह के सारे दिन नौ सौ पचास वर्ष के हुए, तब वह मर गया।”

इतनी लम्बी आयु उस समय कोई आश्चर्य की बात नहीं थी। उत्पत्ति 5 में दिए गए वंशवृत्तों से पता चलता है कि उस समय के कई पूर्वज सैकड़ों वर्षों तक जीवित रहे थे। आदम 930 वर्ष, मतूशेलह 969 वर्ष तक जीवित रहा। कई धर्मशास्त्री मानते हैं कि ऐसी लम्बी आयु प्रारंभ में परमेश्वर की योजना का ही भाग थी, जब तक कि पाप के फैलने के कारण पतन और न्याय पृथ्वी पर नहीं आ गए।

लेकिन जलप्रलय के बाद परमेश्वर ने मनुष्य के जीवनकाल की एक निश्चित सीमा निर्धारित कर दी। जैसा कि लिखा है:

उत्पत्ति 6:3 (पवित्र बाइबल: Hindi O.V.)
“तब यहोवा ने कहा, मेरा आत्मा सदा मनुष्य में बना न रहेगा, क्योंकि वह तो शरीर ही है; तो भी उसके दिन एक सौ बीस वर्ष के होंगे।”

नूह कितने वर्ष जीवित रहा?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 2

यद्यपि यह वचन जलप्रलय से पहले कहा गया था, फिर भी सामान्यतः इसे भविष्य में मानव जीवन की अधिकतम सीमा के रूप में समझा जाता है। जलप्रलय के बाद वंशों में आयु धीरे-धीरे कम होती चली गई (देखिए उत्पत्ति 11)।

इसका धार्मिक महत्व क्या है?

नूह का दीर्घजीवन यह स्मरण दिलाता है कि जलप्रलय से पहले और बाद की दुनिया में कितना बड़ा अंतर था। पहले संसार की दशा अपने मूल, कम भ्रष्ट स्वरूप के समीप थी। परन्तु बाद में मानवता ने पाप के दुष्परिणामों को और भी स्पष्ट रूप से भुगता।

रोमियों 6:23 (पवित्र बाइबल: Hindi O.V.)
“क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है; परन्तु परमेश्वर का
वरदान हमारे प्रभु यीशु मसीह में अनन्त जीवन है।”

यह पद यह सत्य दोहराता है कि मृत्यु और जीवन का छोटा हो जाना अन्ततः पाप का परिणाम है। जलप्रलय कोई प्राकृतिक आपदा मात्र नहीं था, वरन् यह परमेश्वर का न्याय था उस पृथ्वी पर जो हिंसा और

नूह कितने वर्ष जीवित रहा?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 3

भ्रष्टाचार से भर गई थी (देखिए उत्पत्ति 6:5-13)। परन्तु नूह में हम ऐसे व्यक्ति को देखते हैं जिसने “परमेश्वर के साथ संगति रखी” (उत्पत्ति 6:9)। उसका बच जाना यह दिखाता है कि परमेश्वर धार्मिक जनों पर अपनी कृपा करता है।

वास्तव में क्या जीवन को दीर्घ बनाता है?

आज हम लम्बी आयु का कारण अक्सर आहार, व्यायाम या अनुवांशिकता को मानते हैं। यह बातें अपनी जगह सही हैं, परन्तु बाइबल हमें सिखाती है कि यहोवा का भय ही सच्चे और दीर्घजीवन की कुंजी है।

नीतिवचन 10:27 (पवित्र बाइबल: Hindi O.V.)
“यहोवा का भय दिन बढ़ाता है, परन्तु दुष्टों के वर्ष घटाए जाएंगे।”

इसी प्रकार लिखा है:

नीतिवचन 3:1-2 (पवित्र बाइबल: Hindi O.V.)
“हे मेरे पुत्र, मेरी शिक्षा को मत भूल, और तेरा हृदय मेरे आदेशों को मानता रहे। क्योंकि वे तुझे दीर्घायु और जीवन के

नूह कितने वर्ष जीवित रहा?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 4

बहुत वर्ष और शान्ति देंगे।”

इसलिए सच्ची दीर्घायु केवल शरीर की भलाई का विषय नहीं है, यह आत्मिक बात है। यदि हम चाहते हैं कि हमारा जीवन पूर्ण और सार्थक हो, तो हमें परमेश्वर का आदर करना चाहिए, उसकी आज्ञाओं में चलना चाहिए और पाप से दूर रहना चाहिए। अवज्ञा में जीना न केवल आत्मिक, परन्तु शारीरिक दण्ड को भी बुलावा देता है।

परमेश्वर हमारी सहायता करे।

Share on:
WhatsApp

Print this post